अखिल भारतीय कामगार महिला समन्वय समिति (सीटू)

पत्रिका

अक्टूबर 2010 केवल सदस्यों के लिए मूल्य 3 रुपए

7 सितम्बर 2010

ऐतिहासिक हड़ताल

मजदूरों और कर्मचारियों की ऐतिहासिक देशव्यापी हड़ताल

□तपन सेन

इंटक, एटक, एचएमएस, सीआइटीयू, एआइयूटीयूसी, यूटीयूसी, एआइसीसीटीयू, टीयूसीसी इत्यादि केन्द्रीय श्रमिक संगठनों और टेलीकाम, रेलवे, प्रतिरक्षा, बैंक तथा बीमा कर्मचारियों, सार्वजनिक क्षेत्र की विभिन्न इकाईयों के कर्मचारियों और केन्द्र तथा राज्यों के सरकारी कार्यालयों तथा विभागों के कर्मचारियों की अखिल भारतीय फैडरेशनों के आह्वान पर 7 सितम्बर को हुई आम हड़ताल को देश भर में मजदूर वर्ग का जबरदस्त समर्थन मिला। केन्द्रीय श्रमिक संगठनों ने 7 सितम्बर की ऐतिहासिक हड़ताल पर देश के मेहनतकशों को अपनी हार्दिक बधाई दी है।

यह एक ऐतिहासिक घटना रही जब देश के सभी श्रमिक संगठनों ने एकजुट होकर देशव्यापी कार्रवाई की, जिसमें अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग दस करोड़ मजदूरों ने भाग लिया। केन्द्रीय श्रमिक संगठनों ने हड़ताल के इस आह्वान को दिल खोल कर समर्थन देने के लिए मजदूर वर्ग को बधाई दी है।

1991 के बाद से शोषित–पीड़ित जनता की रोजी–रोटी पर और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर भी नव–उदारवादी और कारपोरेट परस्त नीतिगत सत्ता के विनाशकारी प्रभावों के विरुद्ध 7 सितम्बर 2010 की आम हड़ताल, तेरहवीं आम हड़ताल थी, जिसकी विशेषता यह रही कि देश के लगभग सभी श्रमिक संगठन देशव्यापी आम हड़ताल का आह्वान करने के लिए एकजुट हुए। वास्तव में श्रमिक संघों व संगठनों की यह एकजुट कबायद लगभग एक वर्ष पूर्व शुरू हुई थी जब इंटक और बीएमएस सहित देश के सभी केन्द्रीय श्रमिक संगठनों ने 28 अक्टूबर 2009 को राष्ट्रीय विरोध दिवस मनाने का आह्वान करने के लिए और सर्वसम्मत रूप से एक पांच सूत्रीय मांग पत्र सूत्रबद्ध करने के लिए नयी दिल्ली में 14 सितम्बर 2009 को मजदूरों की एक राष्ट्रीय कन्वेंशन का आयोजन किया था।

इसके बाद 16 दिसम्बर 2009 को संसद पर विशाल प्रदर्शन हुआ और फिर 5 फरवरी 2010को देशव्यापी सत्याग्रह का आयोजन किया और गिरफ्तारियां दीं।

जन विरोधी आर्थिक नीतियों के विरुद्ध देशव्यापी एकजुट संघर्ष आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक सम्बद्धताओं से ऊपर उठ कर देश के सभी श्रमिक संघों के सामूहिक तथा प्रदर्शनकारी आग्रहशीलता की यह श्रृंखला 7 सितम्बर की आम हड़ताल में अपने उत्कर्ष पर पहुंची।

बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, छंटनी, श्रम अधिकारों के दमन, श्रम कानूनों के खुले उल्लंघन, कार्यस्थलों में बड़े स्तर पर संविदाकरण इत्यादि के विरुद्ध शोषित–पीड़ित जनता के बढ़ते प्रतिरोध, जिसे गहराते संकट के बीच सरकार की कारपोरेट परस्त नीतियों और समाज में बढ़ती असमानता ने और इसके साथ ही साथ संघर्ष तथा प्रतिरोध को एकजुट बनाने तथा व्यापक बनाने के लिए देश के श्रमिक आंदोलन के प्रमुख हिस्से की निरंतर जारी पहलों ने और तीखा बना दिया था, ने ऐसी स्थिति बनाई, जो केन्द्रीय श्रमिक संगठनों के नेतृत्व को संघर्ष के लिए एकजुट मंच पर साथ ले आई। संघर्ष के लिए बनी इस एकता को और व्यापक तथा मजबूत बनाया जाना चाहिए और नव–उदारवाद के विरुद्ध संघर्ष को नए आयाम देने के लिए इसे एकदम निचले स्तरों तक ले जाना चाहिए।

केन्द्रीय श्रमिक संगठनों द्वारा हड़ताल का यह आह्वान मेहनतकश आवाम की सभी श्रेणियों से जुड़ीं पांच सूत्री मांगों पर दबाव बनाने के लिए किया गया था। ये मांगें हैं: 1) सार्वजनिक वितरण प्रणाली का सार्वभौमीकरण करने और माल बाजार में सट्टेबाजी पर प्रतिबंध लगाने के जरिए निरंतर बढ़ रही महंगाई पर अंकुश लगाने के लिए कदम उठाए जाएं, 2) बिना किसी अपवाद के सभी बुनियादी श्रम कानूनों को कड़ाई से लागू किया जाए और श्रम कानूनों के उल्लंघन के लिए कड़ा दण्ड दिया जाए, 3) मंदीग्रस्त क्षेत्रों में सम्बन्धित उद्यमियों को दिए जा रहे उत्प्रेरक पैकेजों के साथ रोजगार संरक्षण को जोड़ने के लिए ठोस प्रोएक्टिव कदम उठाए जाएं और छंटनी, ले–ऑफ, संविदाकरण तथा आउटसोर्सिंग के विरुद्ध ठोस कदम उठाए जाएं, 4) असंगठित क्षेत्र सामाजिक सुरक्षा कानून 2008 के अन्तर्गत पात्रता के सम्बन्ध में गरीबी की रेखा पर आधारित सभी प्रतिबंधात्मक प्रावधानों को हटाया जाए और ठेका तथा अस्थायी मजदूरों सहित असंगठित क्षेत्र के सभी मजदूरों के लिए राष्ट्रीय न्यूनतम सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए असंगठित क्षेत्र के लिए राष्ट्रीय कोष बनाया जाए और 5) बजटीय घाटे को पूरा करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के केन्द्रीय उद्यमों (सीपीएसई) के शेयरों का विनिवेश न किया जाए और इसकी अपेक्षा उनके बढ़ते रिजर्व तथा सरप्लस का उपयोग उनके विस्तार तथा आधुनिकीकरण के लिए और सार्वजनिक क्षेत्र के बीमार उद्यमों को पुनर्जीवित करने के लिए किया जाना चाहिए।

पश्चिम बंगाल, केरल तथा त्रिपुरा में 7 सितम्बर की आम हड़ताल पूर्ण बंद में बदल गई। इन तीनों राज्यों में हड़ताल को स्वतः स्फूर्त समर्थन मिला और अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में हड़ताली मजदूरों ने इस दिन जुलूसों और प्रदर्शनों का आयोजन करते हुए हड़ताल में भाग लिया। वे किसी तरह के उकसावे में नहीं आए। इन तीनों राज्यों के सभी जिलों तथा औद्योगिक केन्द्रों में सभी क्षेत्रों के मजदूरों की जबरदस्त रैलियां हुईं। अनेक स्थानों पर ट्रेड यूनियनों के संयुक्त प्रदर्शन हुए। हड़ताल में आम लोगों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

असम, झारखण्ड, मणिपुर और उड़ीसा के कुछ हिस्सों और जिलों में बंद जैसी ही स्थिति बन गई थी। पंजाब, हरियाणा तथा उड़ीसा में रोडवेज मजदूरों ने पूर्ण हड़ताल रखी, जिसके चलते इन राज्यों में सामान्य यातायात ठप्प होकर रह गया। राजस्थान तथा आंशिक रूप से मध्य प्रदेश को छोड़ कर केन्द्र तथा राज्य दोनों के लगभग एक करोड़ मजदूरों के भारी बहुमत ने इस सबसे बड़ी देशव्यापी हड़ताल में भाग लिया। ■

क्षेत्रवार हड़ताल का प्रभाव इस प्रकार रहा:

■ बैंकों तथा बीमा कर्मचारियों सहित देश भर के पूरे वित्तीय क्षेत्र में लगभग पूर्ण हड़ताल रही जिसमें इस क्षेत्र के लगभग 20 लाख मजदूरों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया।

■ देश के सभी राज्यों के लगभग एक करोड़ राज्य सरकारी कर्मचारियों, शिक्षकों, राज्यों के सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारियों, बोर्डों तथा निगमों के कर्मचारियों ने जबरदस्त ढंग से हड़ताल में भाग लिया।

■ केन्द्रीय सरकार के लगभग बीस लाख कर्मचारियों जो कि केन्द्र सरकार के कर्मचारियों की कुल श्रम शक्ति का 80 प्रतिशत भाग हैं, ने हड़ताल में भाग लिया। प्रतिरक्षा क्षेत्र में भी हड़ताल 80 प्रतिशत रही।

■ ईसीएल, बीसीसीएल, सीसीएल, एसईसीएल, एनसीएल, डब्ल्यूसीएल, सीएमपीडीआइएल, सिंगरेनी कोलियरीज इत्यादि लगभग नौ कोयला कम्पनियों में काम करने वाले लगभग 6 लाख कोयला मजदूरों की 80 प्रतिशत संख्या ने हड़ताल में भाग लिया। झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ तथा मध्य प्रदेश में फैली गैर-कोयला खनन पट्टी में हड़ताल पूर्ण रही।

■ देश भर में बीएसएनएल के अन्तर्गत काम करने वाले टेलीकॉम मजदूरों तथा कर्मचारियों के 70 प्रतिशत भाग ने हड़ताल में भाग लिया।

■ पेट्रोलियम क्षेत्र में देश के पूर्वी, उत्तर-पूर्वी तथा दक्षिणी भागों में अपस्ट्रीम, रिफायनरियों तथा मार्केटिंग क्षेत्रों में हड़ताल पूर्ण रही जबकि उत्तरी तथा पश्चिमी भारत में हड़ताल आंशिक रही।

■ इस्पात क्षेत्र में दुर्गा पुर, आइआइएससीओ (आइस्को) तथा विशाखापत्तनम में हड़ताल जबरदस्त रही जबकि अन्य स्थानों में यह आंशिक रही।

■ कोची तथा कोलकाता बंदरगाहों में हड़ताल जबरदस्त रही, जबकि दूसरी जगहों पर यह आंशिक रही।

■ बागान क्षेत्र में पूरे देश में हड़ताल लगभग सम्पूर्ण रही।

■ ईंट भट्ठों, बोझा ढोने वालों, बीड़ी तथा मण्डी मजदूरों इत्यादि असंगठित क्षेत्र के मजदूरों ने भारी संख्या में हड़ताल में भाग लिया और देश के विभिन्न भागों में रेल रोको और रास्ता रोको कार्रवाईयों का आयोजन किया।

■ संगठित तथा असंगठित दोनों ही क्षेत्रों के निर्माण मजदूरों ने भारी संख्या में हड़ताल में भाग लिया।

■ हिमाचल प्रदेश में निर्माणाधीन सभी हाईडल परियोजनाओं के निर्माण मजदूरों ने पूर्ण हड़ताल रखी।

■ देश भर की लगभग 15 लाख आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भारी संख्या में हड़ताल में भाग लिया।

■ मछुआरों तथा मछली पालन मजदूरों ने भी हड़ताल में भाग लिया, जिनकी संख्या लाखों में है।

■ राज्य तथा सार्वजनिक क्षेत्र दोनों के परिवहन मजदूरों ने हड़ताल के आह्वान का शानदार ढंग से पालन किया।

■ अधिकतर राज्यों में बिजली मजदूरों ने भारी संख्या में हड़ताल में भाग लिया।

■ देश के लगभग डेढ़ लाख मैडिकल रिप्रेजेन्टेटिवों की भारी संख्या ने हड़ताल में भाग लिया।

■ विशाखापत्तनम और पश्चिम बंगाल के एक विशेष आर्थिक क्षेत्र में पूर्ण हड़ताल रही।

■ दमन के बावजूद हरियाणा के गुड़गांव तथा धारूहेड़ा औद्योगिक क्षेत्र में पूर्ण हड़ताल रही।

आंगनवाड़ी कर्मचारियों की देशव्यापी हड़ताल

□के हेमलता

9 जुलाई 2010 को एक बार फिर यूपीए–II के खिलाफ आंगनवाड़ी कर्मचारियों का रोष और प्रतिरोध सामने आया। उनकी मांगों पर प्रधान मंत्री द्वारा दिए गए आश्वासन पर सरकार की ओर से कोई ठोस कार्रवाई किए जाने की लगभग दो मास तक प्रतीक्षा करने के बाद देश भर में लगभग दस लाख आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने 9 जुलाई को अपने केन्द्र बंद रखे और इस दिन एक जोरदार अखिल भारतीय हड़ताल में भाग लिया। चार लाख से अधिक कर्मचारियों ने इस दिन प्रदर्शनों, जुलूसों, धरनों, सत्याग्रहों, रास्ता रोको और रेल रोको जैसी कार्रवाईयों में भाग लिया और सैंकड़ों स्थानों सपर प्रधान मंत्री का पुतला जलाया। ध्यान रहे, पिछली 4–5 मई को अखिल भारतीय आंगनवाड़ी सेविका एवं सहायिका फैडरेशन (आइफा) ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों की मुख्य मांगों पर एक विराट महापड़ाव का आयोजन कर सरकार को चेतावनी दी थी कि पेन्शन, ग्रैच्युटी तथा मानदेय राशि बढ़ाने जैसी मांगों पर प्रधान मंत्री द्वारा दिए गए आश्वासन पर यदि ठोस कार्रवाई नहीं की गई तो जुलाई में देशव्यापी हड़ताल का आयोजन किया जाएगा। अखिल भारतीय आंगनवाड़ी कर्मचारी कीर्ति समिति तथा महिला आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ, उत्तर प्रदेश ने भी हड़ताल में भाग लिया।

हड़ताल के आह्वान को आंगनवाड़ी कर्मचारियों का अभूतपूर्व समर्थन मिला। आंध्र प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, पंजाब, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल समेत अनेक राज्यों में तो हड़ताल जबरदस्त रही और लगभग पूर्ण हड़ताल रही जबकि दूसरे अनेक राज्यों में परियोजना स्तर तथा जिला स्तर पर प्रदर्शनों इत्यादि का आयोजन किया गया।

धमकियों के बावजूद जबरदस्त भागीदारी

आंध्र प्रदेश में पूर्ण हड़ताल रही। सभी परियोजनाओं में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने बाल विकास परियोजना अधिकारियों तथा सुपरवाइजरों की धमकियों के बावजूद हड़ताल में भाग लिया। ये अधिकारी तथा सुपरवाइजर वाहनों के जरिए एक परियोजना से दूसरी परियोजना में ये धमकियां देते हुए घूमते रहे कि कर्मचारी हड़ताल में भाग न लें। यहां सरकार ने इस दिन आशा कार्यकर्ताओं तथा राज्य सरकार के कार्यक्रम इंदिरा क्रांति पथकम (आइकेपी) के कार्यकर्ताओं से आंगनवाड़ी केन्द्र चलाने की कोशिश करके हड़ताल को भंग करने की कोशिश की।

यहां कुछ दिन पहले ही महिला विकास तथा बाल कल्याण निदेशक ने सभी सुपरवाइजरों को ऐसी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं तथा सहायिकाओं की सूचियां उपलब्ध कराई थीं, जो आंगनवाड़ी केन्द्रों के कामकाज में "समस्याएं पैदा कर रहे हैं।" ये सूचियां यूनियन के कार्यकर्ताओं को निशाना बनाने ओर उन्हें विक्टिमाइज करने की कोशिश करते हुए उपलब्ध कराई गई थीं। किन्तु राज्य सरकार की ऐसी कोई भी कोशिश आंगनवाड़ी कर्मचारियों को हड़ताल में भाग लेने से नहीं रोक पाई।

यहां एक लाख से ज्यादा आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने परियोजना स्तर के धरनों, प्रदर्शनों, जुलूसों और रैलियों में भाग लिया। अनेक परियोजनाओं में रास्ता रोको जैसी कार्रवाईयों का भी आयोजन किया गया। विजयनगरम तथा कृष्णा जिलों में पुलिस ने कर्मचारियों की गिरफ्तारियां कीं। लेकिन आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने अपने नेताओं को साथ लिए बिना वापस जाने से इन्कार कर दिया। मजबूर होकर पुलिस को उन्हें रिहा करना पड़ा।

असम में राज्य के 27 में से 22 जिलों में पूर्ण हड़ताल रही। राज्य में काम कर रही कुल 228 परियोजनाओं में से 167 परियोजनाओं में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हड़ताल में भाग लिया। राज्य के 16 जिलों में जिलास्तरीय लामबंदियां

असम

की गईं, जबकि एक जिले में परियोजना के स्तर पर प्रदर्शन किए गए। यहां आयोजित जुलूसों में लगभग 17000 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया और डिप्टी कमिश्नरों को प्रधान मंत्री को सम्बोधित ज्ञापन दिए गए। ब्रह्मपुत्र घाटी में शिवसागर जिले में ओर बोराक घाटी में कछार हेलाकांडी में पहली बार आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हड़ताल में भाग लिया।

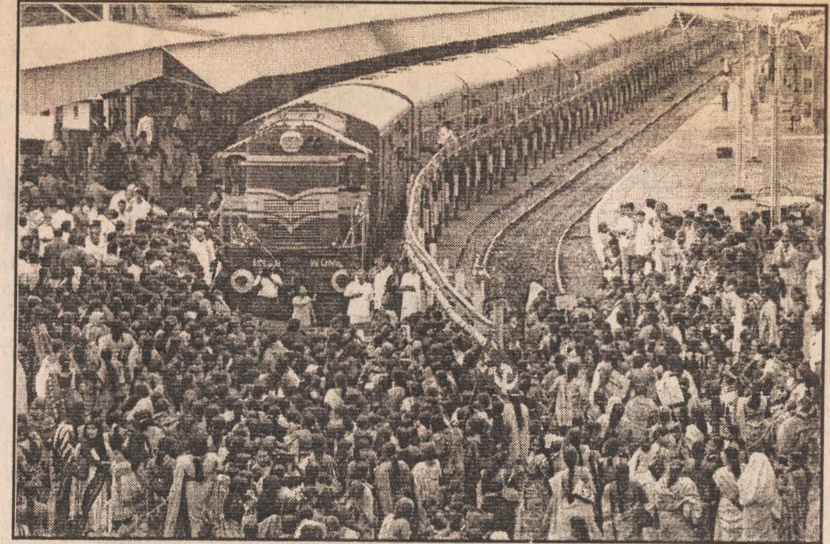

केरल

छत्तीसगढ़ में कबीरधाम जिले को छोड़ कर दूसरे सभी 19 जिलों में पूर्ण हड़ताल रही। यहां जिला स्तरीय रैलियों और प्रदर्शनों के अतिरिक्त राज्य की राजधानी रायपुर में एक विशाल रैली का भी आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 2500 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया। उधर राजनंदगांव में आयोजित एक रैली में लगभग 800–900 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया। और प्रधान मंत्री का पुतला जलाया। बारिश के बावजूद अनेक स्थानों पर आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में प्रदर्शनों में भाग लिया और कई घण्टे तक सड़कें रोके रखीं। दांतेवाड़ा, जगदलपुर, बीजापुर, नारायण गढ़, कांकेर, सरगुजा, कोरबा तथा जशपुर जिलों में लगभग 15000 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हड़ताल तथा प्रदर्शनों में भाग लिया।

गुजरात में आंगनवाड़ी कर्मचारियों की अभूतपूर्व हड़ताल देखने में आई। यहां आयोजित प्रदर्शनों में कर्मचारियों की भारी संख्या ने भाग लिया। राज्य के 22 जिलों में पूर्ण हड़ताल रही और 15 जिलों में प्रदर्शनों इत्यादि कार्रवाईयों का आयोजन किया गया। भड़ूच, दाहोद, राजकोट, कच्छ, खम्बात इत्यादि स्थानों में आयोजित प्रदर्शनों, धरनों और रास्ता रोको कार्रवाईयों में हजारों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया। अहमदाबाद तथा सूरत जिलों में यद्यपि शहरों में हड़ताल नहीं हो पाई, किन्तु यहां ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्ण हड़ताल रही। गुजरात में चार जिलों में पुलिस ने कर्मचारियों पर लाठीचार्ज किया और बल प्रयोग किया।

पश्चिम बंगाल, केरल तथा त्रिपुरा में पूर्ण हड़ताल रही। **पश्चिम बंगाल** में लगभग 1.5 लाख आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने अपने केन्द्र बंद रखे और प्रदर्शनों तथा सभाओं में भाग लिया और सीडीपीओ एवं स्थानीय अधिकारियों को प्रधान मंत्री को सम्बोधित ज्ञापन दिए गए। **केरल** में एआइएफएएच के सभी सदस्यों ने हड़ताल में भाग लिया। यहां पंचायत, परियोजना तथा जिला स्तर पर प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। दो जिलों में रेल रोको कार्रवाईयों का आयोजन किया गया। दो और जिलों में रास्ता रोको कार्रवाईयं का आयोजन किया गया और एक जिले में परियोजना स्तर पर सत्याग्रह का आयोजन किया गया। अनेक स्थानों पर प्रधान मंत्री के पुतले जलाए गए। **त्रिपुरा** में पूर्ण हड़ताल रही। यहां लगभग 19000 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हड़ताल में भाग लिया। सभी परियोजनाओं तथा सब–डिविजनों में परियोजना तथा सब–डिविजन स्तर पर प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। इन प्रदर्शनों, जुलूसों तथा सभाओं में लगभग 15000 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया। यहां जिला अधिकारियों के जरिए प्रधान मंत्री को सम्बोधित ज्ञापन दिए गए।

उत्तर प्रदेश एक और ऐसा राज्य रहा, जहां अभूतपूर्व हड़ताल हुई। राज्य के पूर्वी तथा पश्चिमी भागों में हड़ताल पूर्ण रही। बुंदेलखण्ड तथा राज्य के दक्षिण हिस्सों में लगभग 70–80 प्रतिशत हड़ताल रही। राज्य के मध्य भाग में हड़ताल आंषिक रही। अनेक परियोजनाओं में और मुरादाबाद, बिजनौर, जे पी नगर तथा मेरठ जैसे जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शनों और धरनों का आयोजन किया गया और पुतले जलाए गए। **महाराश्ट्र** में भी पूर्ण हड़ताल रही। जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शनों का आयोजन किया गया और अधिकारियों को ज्ञापन दिए गए।

जबरदस्त समर्थन

कर्नाटक में 80 प्रतिशत आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हड़ताल में भाग लिया। लगभग सभी जिलों तथा राजधानी बंगलौर में प्रदर्शन हुए। **पंजाब** में सभी 20 जिलों में हड़ताल रही। अनेक जिलों में तो पूर्ण हड़ताल रही। यहां सभी जिलों में रास्ता रोको, रेल रोको, धरनों, प्रदर्शनों और जुलूसों का आयोजन किया गया और पुतले जलाए गए। इन कार्रवाईयों में 10,000 से ज्यादा कर्मचारियों ने भाग लिया। संगरूर में

हरियाणा

पंजाब

ਸੰਗਰੂਰ : ਆਂਗਣਵਾੜੀ ਵਰਕਰਜ਼ ਯੂਨੀਅਨ ਵੱਲੋਂ ਦਿਤੇ ਧਰਨੇ 'ਚ ਧਕਾਮੁਕੀ ਹੁੰਦੇ ਹੋਏ ਪੁਲਸ ਮੁਲਾਜ਼ਮ।
ਫੋਟੋ: ਦਰਪਨ ਸੰਗਰੂਰ

दिल्ली

पुलिस ने बल प्रयोग किया जहां यूनियन की राज्य अध्यक्ष और आइफा की सचिव उषा रानी दूसरे आंगनवाड़ी कर्मचारियों के साथ घायल हो गईं।

हरियाणा में कुल 21 में से 18 जिलों में हड़ताल रही। गुड़गांव, भिवानी, हिसार, सिरसा, फरीदाबाद, करनाल, पलवल तथा मेवात में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने जुलूसों और रास्ता रोको कार्रवाईयों का आयोजन किया। अनेक स्थानों पर आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने प्रधान मंत्री के पुतले की शव यात्रा निकाली और बाद में पुतले जलाए। पानीपत में नेशनल हाईवे पर लगभग एक घण्टा रास्ता रोका गया। बाढ़ के बावजूद कैथल तथा यमुना नगर जिलों में प्रदर्शनों और रास्ता रोको कार्रवाईयों का आयोजन किया गया।

मध्य प्रदेश में 23 जिलों में हड़ताल का आयोजन किया गया और 17 जिलों में प्रदर्शन किए गए। राज्य के 6 जिलों में रास्ता रोको कार्रवाईयों का आयोजन किया गया। सभी जिलों में प्रधान मंत्री को सम्बोधित ज्ञापन भी जिला अधिकारियों को दिए गए। जबलपुर और भोपाल सहित अनेक जिलों में हड़ताल को तोड़ने के लिए अधिकारियों ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों को डराया–धमकाया और उन पर अनेक तरह के दबाव डाले। इस पर भी आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भारी संख्या में हड़ताल में भाग लिया। जबलपुर में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने विशाल जुलूस निकाला और दो किलो मीटर तक मार्च किया।

उत्तराखण्ड के देहरादून, पौड़ी, गढ़वाल, चमोली तथा ऊधमसिंह नगर में पूर्ण हड़ताल रही जबकि टिहरी गढ़वाल, अलमोड़ा तथा हरिद्वार में आंशिक हड़ताल रही। अनेक जिलों में उन आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भी हड़ताल में भाग लिया जो आइफा के सदस्य नहीं हैं। पौड़ी गढ़वाल में रास्ता रोको कार्रवाई का आयोजन किया गया। चमोली में परियोजना स्तर के प्रदर्शन किए गए। अन्य जिलों में भी जिला स्तरीय प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। जिला अधिकारियों को प्रधान मंत्री को सम्बोधित ज्ञापन दिए गए।

बिहार में गया में 1000 से अधिक आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने जिला मुख्यालय पर दिन भर धरना देकर प्रधान मंत्री का पुतला जलाया। नवादा, जहानाबाद, दरभंगा और पूर्वी चम्पारण सहित दूसरे जिलों में भी हड़ताल को उत्साहपूर्ण समर्थन मिला।

दिल्ली में पहली बार आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने हड़ताल में भाग लिया। देश की राजधानी के विभिन्न भागों में सैंकड़ों की संख्या में आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने अत्यंत व्यस्त आइटीओ केन्द्र पर एकत्रित होकर पुलिस के दबाव का प्रतिरोध करते हुए गगनभेदी नारों के बीच प्रधान मंत्री का पुतला जलाया।

उड़ीसा के चार जिलों में हड़ताल रही। सैंकड़ों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने बालासोर में एक रैली का आयोजन किया और जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया। कुछ परियोजनाओं में सड़कें रोकी गईं और प्रदर्शन किए गए।

राजस्थान में सीकर, चुरू, चित्तौड़गढ़, डूंगर पुर तथा जयपुर जिलों में हड़ताल का आयोजन किया गया। यहां सैंकड़ों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने जिला कलेक्टरों के कार्यालयों पर प्रदर्शन किए और अधिकारियों को ज्ञापन दिए।

हिमाचल प्रदेश में यद्यपि हड़ताल का आयोजन नहीं किया गया क्योंकि यहां आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने अपनी राज्य स्तरीय मांगों के लिए कुछ दिन पहले ही हड़ताल की थी। किन्तु जिला स्तर पर प्रदर्शनों का आयोजन किया गया जिनमें सैंकड़ों आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया।

तमिलनाडु में 7000 से अधिक आंगनवाड़ी कर्मचारी चेन्नई में एकत्रित हुए और मरीना बीच के पास अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया जो दो दिन तक चला। पुलिस ने 11 जुलाई को लगभग एक हजार आंगनवाड़ी कर्मचारियों को गिरफ्तार कर लिया, जिन्हें बाद में रिहा कर दिया गया।

पुडुचेरि में केन्द्रीकृत प्रदर्शन का आयोजन किया गया और अधिकारियों को ज्ञापन दिया।

आइफा ने सभी आंगनवाड़ी कर्मचारियों को, राज्य समितियों और फैडरेशन के कार्यकर्ताओं को इस हड़ताल को अभूतपूर्व ढंग से सफल बनाने और भारी संख्या में प्रदर्शनों में भाग लेने के लिए बधाई दी है। उसने मांग की है कि प्रधान मंत्री द्वारा दिए गए आश्वासनों को पूरा करने के लिए सरकार तत्काल कदम उठाए। उसने चेतावनी दी है कि यदि ऐसा नहीं किया जाता और सरकार आंगनवाड़ी कर्मचारियों की मांगों की अनदेखी करती रहती है तो संघर्ष को और तेज किया जाएगा। ■

संसदीय समिति के साथ आइफा के प्रतिनिधिमंडल की बैठक

महिला सशक्तिकरण संसदीय समिति द्वारा आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं की स्थिति का अध्ययन करने का निर्णय लिया गया। जिसके लिए अखिल भारतीय आंगनवाड़ी सेविका एवं सहायिका फैडरेशन के प्रतिनिधिमंडल को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए 5 अगस्त 2010 को बुलाया गया। छः सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल जिसमें हिमाचल प्रदेश से सरोज शर्मा जोकि फैडरेशन की कोषाध्यक्ष हैं, पंजाब से उषा रानी, हरियाणा से संतोष रावल, मध्य प्रदेश से किशोरी वर्मा जोकि सभी आइफा के सचिव हैं, के साथ दिल्ली से सरोज और हरियाणा से मिनाक्षी शर्मा, कमेटी से मिले तथा आइफा की ओर से एक नोट प्रस्तुत किया। नोट के अलावा उन्होंने विभिन्न राज्यों में आंगनवाड़ी कर्मचारियों द्वारा सरकार की नीतियों के कारण झेली जा रही समस्याओं का भी वर्णन किया। उन्होंनें आंगनवाड़ी केंद्रों की स्थिति का भी व्याख्यान किया।

आंगनवाड़ी केंद्रों की कार्यप्रणाली व सेविकाओं और सहायिकाओं की स्थिति में सुधार के लिए उन्होंने निम्नलिखित कदम उठाने का सुझाव दिया –

1. सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को ग्रेड 3 व सहायिकाओं को ग्रेड 4 के सरकारी कर्मचारियों के रूप में सभी उपलब्ध लाभों सहित नियमित किया जाना चाहिए।

2. आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को कुशल श्रमिकों और सहायिकाओं को अर्द्ध कुशल श्रमिकों को भुगतान किए जा रहे न्यूनतम वेतन के बराबर वेतन दिया जाना चाहिए।

3. सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को महंगाई भत्ता प्रदान किया जाना चाहिए आंगनवाड़ी कर्मचारियों का वेतन स्वतः उपभोक्ता मूल्य सूचकांक से जोड़ा जाना चाहिए

4. सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को ग्रेच्युटी, पेंशन एवं भविष्य निधि सहित सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान किए जाने चाहिए

5. किसी भी रूप में आंगनवाड़ी केन्द्रों का निजीकरण नहीं किया जाना चाहिए.

6. सभी 'मिनी आंगनवाड़ी केंद्रों' को सामान्य आंगनवाड़ी केंद्रों में बदला जाना चाहिए और सहायिकाओं की नियुक्ति भी की जानी चाहिए। इन केंद्रों के आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को भी अन्य आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के समान वेतन व लाभ प्रदान करने चाहिए।

7. भारत सरकार द्वारा आईसीडीएस के सर्वव्यापीकरण और सभी स्वीकृत आंगनवाड़ी केन्द्रों के संचालन के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन आबंटित किए जाने चाहिए।

कमेटी ने ध्यानपूर्वक प्रतिनिधिमंडल की बातों को सुना। कमेटी द्वारा उनकी सिफारिशें संसद में प्रस्तुत की जाएंगी। ■

सीआइटीयू कार्य समिति बैठक

सीआइटीयू ने नव–उदारवादी आर्थिक नीतियों की सत्ता को बदलने के लिए संघर्षों में तेजी लाने का आह्वान किया। नयी दिल्ली में 15–17 जुलाई, 2010 को सम्पन्न सीआइटीयू कार्य समिति की बैठक ने श्रमिक वर्ग को आह्वान किया कि वह मजदूरों की राष्ट्रीय कन्वेंशन के निर्णय के अनुसार आगामी 7 सितम्बर को पूर्ण हड़ताल करके देश में आर्थिक गतिविधियों को ठप्प कर दे। कार्य समिति की बैठक ने सीआइटीयू के उपाध्यक्ष एम के पन्धे द्वारा पेश किए गए एक प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार करके मजदूरों की राष्ट्रीय कन्वेंशन के हड़ताल के निर्णय का पूर्ण अनुमोदन किया। महासचिव की रिपोर्ट पर हुई बहस में 41 सदस्यों ने भाग लिया और रिपोर्ट के सूत्रीकरणों तथा प्रस्तावों का पूर्ण अनुमोदन किया। 7 सितम्बर की अखिल भारतीय हड़ताल की पूर्ण सफलता सुनिश्चित करने के तात्कालिक काम के अतिरिक्त कार्य समिति ने कर्मचारी पेन्शन योजना के मुद्दे पर व्यापक अभियान चलाने, सीआइटीयू की स्थापना की चालीसवीं वर्षगांठ मनाने और अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शती मनाने का निर्णय भी लिया। उसने संगठन सम्बन्धी अपने भुबनेश्वर दस्तावेज के क्रियान्वयन की समीक्षा के लिए संगठन पर एक कार्यशाला आयोजित करने का निर्णय भी भी लिया। सीआइटीयू की राज्य समितियों द्वारा तय किए गए सदस्यता के लक्ष्यों के आधार पर कार्य समिति ने सीआइटीयू की सदस्य संख्या को बढ़ा कर अगले महाधिवेशन तक 84 लाख करने का निर्णय भी लिया।

एम के पन्धे ने 16 जुलाई को पी राम मूर्ति ट्रेड यूनियन स्कूल तथा रिसर्च सेंटर का उद्घाटन किया। कार्य समिति ने इसके लिए आवश्यक कोष जुटाने और यह सुनिश्चित करने का निर्णय लिया कि निश्चित समय में इसका निर्माण पूरा हो जाए। इसके साथ ही साथ कार्य समिति ने सीआइटीयू की स्थापना की चालीसवीं वर्षगांठ मनाने के हिस्से के तौर पर विभिन्न स्तरों पर ट्रेड यूनियन कक्षाएं आयोजित करना जारी रखने का भी निर्णय लिया। मजदूर वर्ग के एकजुट संघर्षों को तेज करने और शोषित–पीड़ित जनता के हितों की रक्षा के लिए सीआइटीयू को मजबूत करने सम्बन्धी सदस्यों की विश्वास तथा जोश की भावना के साथ कार्य समिति की यह बैठक सम्पन्न हुई। ■

अखिल भारतीय कामगार महिला समन्वय समिति की बैठक

कामगार महिलाओं की अखिल भारतीय समन्वय समिति की बैठक 4–5 अगस्त 2010 को सुन्दरैय्या विज्ञान केन्द्र, हैदराबाद में सम्पन्न हुई। समिति के नौवें अखिल भारतीय सम्मेलन के बाद यह पहली बैठक थी। बैठक में दिल्ली के अतिरिक्त सभी राज्यों से सम्बन्धित समिति के सदस्यों, सीआइटीयू के अध्यक्ष ए के पद्मनाभन तथा सीआइटीयू की सभी अखिल भारतीय महिला पदाधिकारियों ने भी भाग लिया।

समिति की संयोजिका हेमलता ने लिखित रिपोर्ट पेश की जिसमें कामकाजी महिलाओं के नौवें अखिल भारतीय सम्मेलन, सीआइटीयू के तेरहवें महाधिवेशन में कामकाजी महिलाओं की भागीदारी और सीआइटीयू की विभिन्न समितियों में कामकाजी महिलाओं के प्रतिनिधित्व की समीक्षा की गई थी।

रिपोर्ट पर बहस में 25 सदस्यों ने भाग लिया। उनकी ओर से जहां रिपोर्ट में की गई समीक्षाओं तथा निर्धारित कार्यों का अनुमोदन किया गया वहीं अपने–अपने राज्यों में चलाई जा रही गतिविधियों की जानकारी भी दी गई जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने तथा सात सितम्बर की देशव्यापी हड़ताल से सम्बन्धित गतिविधियां भी शामिल थीं।

सीआइटीयू के अध्यक्ष पद्मनाभन ने कुछ दिन पूर्व दिल्ली में सम्पन्न सीआइटीयू कार्य समिति के फैसलों के साथ–साथ श्रमिक आंदोलन, सीआइटीयू तथा कामगार महिलाओं के तात्कालिक कार्यों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर कामकाजी महिलाओं पर सीआइटीयू द्वारा प्रकाशित अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर आधारित पुस्तिका का लोकापर्ण भी किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस शताब्दी पर एक पुस्तिका का प्रकाशन पहले ही किया जा चुका है। अगले साल महिला दिवस के अवसर पर उसका दूसरा संस्करण लाने का फैसला भी किया गया। इसके अतिरिक्त नवम्बर 2010 तक आठ घण्टे के काम पर एक पुस्तिका और समान काम के लिए समान वेतन, प्रसूति लाभ एवं शिशु पलना गृहों तथा विधान मण्डलों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने से सम्बन्धित विषयों पर छोटी–छोटी पुस्तिकाओं को श्रृंखलाबद्ध करके प्रकाशित किया जाएगा। ■

कॉमन वेल्थ बनाने की खेल में कॉमन पुरुषों और महिलाओं की लूट

□सवेरा

प्रत्येक व्यक्ति जो आशंकाएं व्यक्त कर रहा था वे आखिरकार सही साबित हुई हैं। अक्टूबर 2010 में होनी तय 19वीं कामन वेल्थ खेलों चमकते भारत के चौखटे के रूप में पेश किया जा रहा था, जहां देश की दौलत, कोई भी आयोजन करने की क्षमता, प्रौद्योगिकीय श्रेष्ठता और राष्ट्रीय गौरव का खुला प्रदर्शन होता है। किन्तु इन खेलों की तैयारियों के अंतिम दिनों में हम क्या होते देख रहे हैं? खुले आम रिश्वत खोरी, फ्राड एवं धोखाधड़ियां, गबन पर गबन, भाई–भतीजावाद, खेलों के आयोजन के लिए 'उत्तरदायी राजनीतिज्ञों एवं नौकरशाहों की अक्षमताओं (दूसरे शब्दों में उनकी नालायकियों) का प्रदर्शन होते देखा जा रहा है।

एयर कण्डीशनरों से लेकर छोटी से छोटी चीज के लिए अतिशय मूल्य चुकाया गया और वह भी उन कम्पनियों को जिनके नाम ही कोई नहीं जानता; जिन खेल परिसरों का निर्माण किया गया उनकी छतों से पानी टपक रहा है, उनकी दीवारों में दरारें पड़ रही हैं, इन सब के बारे में समाचार पत्रों में आए दिन कुछ न कुछ छपता रहता है। लोभ एवं लालच का इतना निर्मम और शर्मनाक प्रदर्शन शायद ही कभी हुआ हो। कॉमन वेल्थ खेलों के समाप्त हो जाने के बाद भी लम्बे समय तक इसकी कटु यादें हमें सताती रहेंगी।

इस सबका महत्व है, इसमें संदेह नहीं और सत्य का पता लगाया ही जाना चाहिए। किन्तु तस्वीर का एक और पहलू भी है जिसकी ओर मीडिया की ओर से अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा। यह कहानी आम आदमी चाहे वह पुरुष हो या महिला से सम्बन्ध रखती है। हम उन्हीं आम आदमियों की दृष्टि से महान कॉमन वेल्थ घोटाले पर एक नजर डालते हैं क्योंकि इन लोगों की चर्चा न समाचार पत्रों और न टी0वी0 चैनलों में होती है।

"मैंने इस पुल को बनाया था"–शांति देवी

वह तीस वर्ष की है किन्तु देखने में चालीस वर्ष से अधिक आयु की लगती है। वह नए बने निजामुद्दीन फलाई ओवर के निकट सड़क के किनारे बैठी आराम कर रही थी। उसके समीप बबूल के पतले पेड़ के नीचे अध नंगे नन्हें मुन्नों का एक छोटा–सा दल खेलने में मस्त है। उनमें से दो उसके बच्चे हैं। एक पांच साल का श्यामू तथा दूसरी अढ़ाई वर्ष की रानी। उसका पति कुछ किलो मीटर दूर दुकान से आटा खरीदने के लिए गया हुआ है। *"मैंने इस पुल को बनाया है।"* यह बात वह गर्व से नहीं कहती पर हकीकत का बयान करती है। वह कहती है, *"मुझे एक महीना काम करने पर लगभग 1500 रुपए मिले थे।"* उसे एक ठेकेदार ने काम पर रखा था। वह मिक्स सीमेंट के तसले उठा कर पिल्लर बनाने वाले मिस्त्री के पास ले जाती थी। जब ये पिल्लर बन गए तो उसे वहां पड़े कंक्रीट और मलबे को उठा कर सड़क के किनारे–किनारे फैंकने का काम दिया गया। ठेकेदार हर महीने कोरे कागज पर उसका अंगूठा लगवा लेता। उसके पति को थोड़ा कुशल श्रमिक वाला काम करने पर 2500 रुपए महीने की पगार दी जाती और उससे भी कोरे कागज पर दस्तखत कराए जाते।

दिल्ली में निर्माण कार्य करने वाले मजदूरों का न्यूनतम वेतन 5000 रुपए प्रति मास निश्चित किया गया है। इसलिए शांति देवी तथा उसके पति को हर महीने कम से कम 10,000 रुपए की पगार मिलनी चाहिए। क्योंकि उसका पति अर्ध कुशल श्रमिक है इसलिए वे इससे भी अधिक पगार पाने के हकदार हैं। किन्तु असल में उन्हें केवल 4000 रुपए दिए जाते हैं और इस तरह ठेकेदार उनकी मेहनत की कमाई के 6000 रुपए अपनी जेब में डाल लेता है अर्थात् प्रति मजदूर तीन हजार रुपए की कमाई वह कर लेता है। विभिन्न संगठनों की ओर से लगाए गए अनुमानों के अनुसार दिल्ली में कॉमन वेल्थ खेलों की विभिन्न परियोजनाओं में कम से कम तीन लाख मजदूर काम कर रहे हैं। उनकी कितनी लूट होती है, इसका गणित सीधा और सरल है।

'यदि ठेकेदार तीन लाख मजदूरों से हर मास प्रति मजदूर तीन हजार रुपए हड़प लेते हैं तो ठेकेदारों की लाबी द्वारा हर महीने की जाने वाली इस लूट की राशि 90 करोड़ रुपए बन जाती है, सुन कर सिर चकरा जाता है। क्या इस पर भी इसे बड़ा घोटाला नहीं कहा जाएगा?"

जो मजदूर निर्माण स्थल पर काम करते हैं, उन्हें कानूनी तौर पर रहने के लिए पक्के घर, स्वच्छ व सुरक्षित पेय जल, बिजली, नन्हें मुन्नों के लिए शिशु पलना गृह, बड़े बच्चों के लिए स्कूल, डाक्टरी लाभ, साप्ताहिक अवकाश तथा और भी अनेक प्रकार की सुविधाएं दी जानी चाहिएं। शांति तथा उसका परिवार अपने जैसे 35 परिवारों के साथ निर्माण स्थल के नजदीक ऊबड़ खाबड़ जमीन पर लोहे की चादरों से बने शैड्स में रहते हैं। वहां पाखाने नहीं हैं और न ही दूसरी सुविधाएं उन्हें प्राप्त हैं। वे बोर वैल से पानी लेते हैं जो ईंटों और कंक्रीट टैंक में डालने के काम आता है।

एक अध्ययन के अनुसार कॉमन वेल्थ खेलों के निर्माण कार्यों में लगे अधिकतर मजदूरों की जीवन स्थितियां अत्यंत अस्वस्थ्यकर हैं। यह स्थिति अधिकतर निर्माण स्थलों की है। *"6 से 8 मजदूरों को दस बाई दस फुट ईंटों से घिरे स्थान*

में रहना होता है। इन झुग्गियों पर टीन की चादरों की छत होती है; वहां न बिजली होती है और न ही उनमें वेंटीलेशन होता है जहां से खाना बनाते समय उठने वाला धुआं तथा दूसरी गंदी हवा बाहर निकल सके। लगभग 100 मजदूर एक डोरमैटरी में बनी शायिकाओं पर सोते हैं; ये मजदूर इसे मुर्गी खाना का नाम देते हैं। वहां पाखाना नहीं है। एक खुले टैंक के बीच में पर्दा डाल कर महिलाओं एवं पुरुषों के नहाने के लिए अलग–अलग जगह बनाई गई है। बड़े निर्माण स्थलों में बने पाखानों की संख्या बेहद कम है।" उदाहरण के लिए इंदिरा गांधी स्टेडियम में 107 मजदूरों के लिए केवल एक पाखाना है। दिल्ली उच्च न्यायालय की ओर से निर्माण स्थलों में काम करने वाले मजदूरों की स्थितियों की जांच करने के लिए बनाई गई समिति ने पाया कि इन निर्माण स्थलों में पचास मजदूरों के पीछे एक पाखाना है।

"इस कालोनी की नींव लहू से सनी है"–संतोख सिंह

संतोख सिंह एक इलेक्ट्रिशियन है। कामन वेल्थ गांव में खेलों के दौरान भारत आने वाले विदेशी खिलाड़ियों के ठहरने के लिए बनाए जा रहे बहुमंजिला फलैटों के परिसर में वह काम करता है। उसका कहना है कि यहां बनने वाले लग्जरी कम्पलेक्स की नीवों में लहू भरा है--दर्जनों श्रमिकों का लहू जो यहां काम करते समय घायल हुए अथवा मौत की आगोश में चले गए। शैलेन्द्र एक 28 वर्षीय मजदूर, करोड़ों रुपए की लागत से बनने वाले कामन वेल्थ गांव में मारा गया जब निर्माण सामग्री ऊपर पहुंचाने वाली क्रेन उस पर गिर पड़ी थी। ठेकेदार कम्पनी आहलूवालिया कंस्ट्रक्शनस् ने इस मामले को रफा–दफा करने का प्रयास किया और शैलेन्द्र के परिवार को पचास हजार रुपए का मुआवजा देने की पेशकश की। इस पर वहां काम करने वाले मजदूर भड़क उठे और उन्होंने इस मामले में चुप रहने से इन्कार कर दिया। सैंकड़ों मजदूरों ने इकट्ठे होकर इसके खिलाफ धरना दिया। अब पता चला है कि ठेकेदार कम्पनी ने शैलेन्द्र के परिवार को पांच लाख रुपए का मुआवजा दिया है।

इन कामकाजी स्थलों में मारे जाने वाले मजदूरों की संख्या कितनी है, इसे गुप्त रखा जा रहा है और इस तरह यह एक रहस्य बन चुका है। एक अनुमान के अनुसार मरने वालों की संख्या 49 है जबकि दूसरे स्त्रोतों से उपलब्ध जानकारी के अनुसार अब तक लगभग 70 मजदूर मारे जा चुके हैं। इसका कारण सांफ है। ये मजदूर तथा उनके सेवायोजक राजधानी के दिल में ही गैर कानूनी तरीके से काम कर रहे हैं। यहां बहुमूल्य मानवीय जीवन का कोई मोल नहीं है। इन मजदूरों को भारी मशीनरी के साथ काम करना होता है, उनकी सुरक्षा एवं संरक्षा के प्रबंध नहीं किए जाते, ऊपर से समय पर काम पूरा करने का दबाव, काम का जबरदस्त बोझ और घटिया निर्माण सामग्री का उपयोग करना इत्यादि बातें उनके लिए जानलेवा बन जाती हैं।

क्योंकि मजदूरों की भारी बहुसंख्या के नाम किसी रजिस्टर में दर्ज नहीं होते अथवा उनका पंजीकरण ही नहीं किया जाता और न ही किसी रिकार्ड में उनका उल्लेख होता है। इसलिए सेवा योजक कोई दुर्घटना हो जाने पर थोड़ा बहुत मुआवजा देकर मामले को तत्काल रफा–दफा करने का प्रयास करते हैं। मजदूर आतंकित होते हैं और उनमें असुरक्षा की भावना भी होती है इसलिए वे आम तौर पर विरोध नहीं करते। अधिकांश मजदूर यूनियन के झण्डे के नीचे नहीं आते इसलिए जरूरत पड़ने पर उन्हें मार्ग दर्शन नहीं मिलता। उन्हें कानून का ज्ञान नहीं होता। यहां केवल दुर्घटनाएं ही नहीं होती जिनमें निरीह व असहाय मजदूर मारे जाते हों इसके अलावा बीमारियों के कारण भी मजदूर मौत की आगोश में चले जाते हैं। यही नहीं, सेवा योजक की ओर से इन मजदूरों को डाक्टरी सुविधा भी उपलब्ध नहीं कराई जाती। वे बीमार हो जाने पर भी लगातार अपना काम करते चले जाते हैं।

विश्व स्तरीय भाहर का निर्माण कैसे हो?

मलिन बस्तियों का विध्वंस करने के साथ–साथ दिल्ली सरकार एक और काम को पूरा करने के लिए दिन रात एक कर रही है। वह पचास हजार भिखारियों तथा उन हजारों बेघर लोगों को शहर से बाहर निकाल रही है जो रात के समय सड़क के किनारे सोते हैं। यही तरीका है शहर को सुन्दर बनाने का। वह गरीबी की कुरूपता को छुपा कर विदेशी पर्यटकों को लुभाना चाहती है; वह नहीं मानती कि ये लोग भी भारतीय हैं और यदि आप चाहते हैं कि विदेशी नागरिकों को यहां की गरीबी नजर न आए तो उनकी गरीबी के कारणों को दूर कीजिए; उन्हें रहने के लिए घर दीजिए; उन्हें डाक्टरी सहायता दीजिए; उनके दुःखों और कष्टों को दूर कीजिए।

कॉमन वेल्थ खेलों की अनुमानित लागत-कई वर्षों का लेखा

प्रारम्भिक लागत (मई 2003)	296 करोड़ रुपए
सरकारी नीलामी की लागत (दिसम्बर 2003)	1835 करोड़ रुपए
मंत्रिमण्डल द्वारा दी गई	3556 करोड़ रुपए
अंतिम बजट स्वीकृति (2007)	+/–300 करोड
सीएजी रिपोर्ट का अनुमान (2009)	12,888 करोड़ रुपए
स्वतंत्र अनुमान (2010)	30,000 करोड़ रुपए तक

महाराष्ट्र: घरेलू श्रमिकों का जुझारू प्रदर्शन

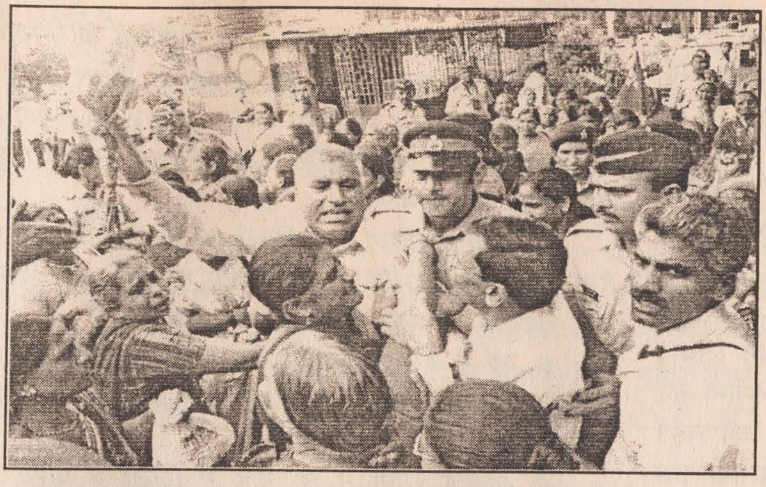

पूरे महाराष्ट्र में काम करने वाले घरेलू श्रमिकों की ओर से 12 जून, 2010 को मुम्बई में जुझारू प्रदर्शन किया गया। वे मुम्बई उच्च न्यायालय के उस निर्णय का विरोध कर रहे थे जिसके द्वारा मुम्बई के शासकीय क्षेत्र जहां विधान सभा, राज्य सचिवालय, उच्च न्यायालय आदि स्थित हैं और आजाद मैदान तक के पूरे इलाके में सड़कों पर विरोध प्रदर्शन करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। ये श्रमिक राज्य के सभी क्षेत्रों जैसे विदर्भ, मराठवाड़ा, उत्तरी तथा पश्चिम मराठवाड़ा से आए थे। वे आजाद मैदान जाने की बजाए हुतात्मा चौक में एकत्रित हुए जहां पुलिस द्वारा उन्हें सीआइटीयू नेताओं सहित जबरदस्ती गाड़ियों में बिठा कर आजाद मैदान लाया गया। आजाद मैदान में मजदूरों की रैली को सीआइटीयू नेताओं नरसय्या एडम, डाक्टर कराद, शुभा शमीम, किरण मोघे, सोनिया गिल तथा नलिनी कालबुरगी इत्यादि ने सम्बोधित किया। बाद में एक प्रतिनिधिमण्डल राज्य के श्रम कल्याण मंत्री से मिला और उन्हें मांग पत्र भेंट किया।

छत्तीसगढ़: कामगार महिलाओं की प्रथम राज्य स्तरीय बैठक

रायपुर में 21 अगस्त, 2010 को कामगार महिलाओं की प्रथम राज्य स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता सीआइटीयू की छत्तीसगढ़ राज्य समिति की सचिव अरूणा वैष्णव ने की जबकि एनटीपीसी ठेका मजदूर यूनियन कोरबा, निर्माण मजदूर संघ कोरबा, छत्तीसगढ़ मण्डी मजदूर एकता यूनियन, छत्तीसगढ़ लाल झण्डा बीड़ी मजदूर एकता यूनियन, विपणन संघ, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहायिका यूनियन, हिन्दुस्तान स्टील इम्पलाईज यूनियन भिलाई, मध्यान्ह भोजन मजदूर एकता यूनियन से सम्बन्धित कुल 45 कामगार महिलाओं ने भाग लिया। सीआइटीयू की छत्तीसगढ़ राज्य समिति की उपाध्यक्ष कामरेड अंजना बाबर की ओर से रिपोर्ट पेश की गई। रिपोर्ट में प्रदेश के विभिन्न उद्योगों में जहां कामगार महिलाएं भारी संख्या में काम करती हैं, पर प्रकाश डालते हुए इन क्षेत्रों में संगठन निर्माण एवं सदस्यता विस्तार, बैठक के उद्देश्य इत्यादि की चर्चा की गई थी। रिपोर्ट पर बहस में 13 साथियों ने भाग लिया। बैठक को सीआइटीयू की कोषाध्यक्ष रंजना निरूला तथा राज्य सीआइटीयू के उप महासचिव अजीत कुमार लाल ने भी सम्बोधित किया।

पाठकों से निवेदन

पत्रिका परिवार अपने प्रिय पाठकों के संघर्ष के अनुभव, रिपोर्ट, संक्षिप्त लेख, कहानियां, कविताएं आदि निम्न पते पर आमंत्रित करता है:

संपादक, पत्रिका, बीटीआर भवन, 13 ए राउज़ ऐवेन्यु, नई दिल्ली. 110002;

फैक्स: 23221284; ईमेल : aiccww@yahoo.com

आइफा की राष्ट्रीय कार्यशाला

18 जुलाई 2010 को नई दिल्ली में हिन्दी भाषी राज्यों के नेतृत्वमंडल की बैठक आयोजित की गई थी। इसके बाद आइफा की राष्ट्रीय कार्यशाला 29–31 अगस्त 2010 को पी सुदरैया विज्ञान केंद्र, हैदराबाद में आयोजित की गई। आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पुडुचेरी, पंजाब, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और प० बंगाल – 20 राज्यों तथा आइफा अखिल भारतीय केंद्र के 167 प्रतिनिधियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। 29 अगस्त को इसके उद्देश्यों और इच्छित परिणामों का परिचय देते हुए कार्यशाला की कार्यवाही आरम्भ की गई।

कार्यशाला में नौ सत्र आयोजित किए थे, प्रत्येक सत्र के लिए प्रतिनिधियों को नोट उपलब्ध कराए गए और प्रत्येक सत्र के बाद प्रतिनिधियों को कार्यकलाप दिए गए, जिसमें प्रत्येक बिंदु पर प्रतिनिधियों को उनके जवाब देने थे। प्रत्येक राज्य को, राज्य व जिलों के मानचित्र दिए गए। प्रतिनिधियों को उन मानचित्रों पर अपने संगठन की स्थिति दर्शाने के लिए कहा गया। प्रतिनिधियों को यह बहुत रुचिकर लगा और वे दंग रह गए जब उन्होंने राज्य के नक्शों में चार प्रकार के रंग भरे। रंग के लिए मापदंड दिए गए थे – लाल रंग उन जिलों के लिए जिन जिलों में 50 प्रतिशत से अधिक सदस्यता हो, हरा – 20 प्रतिशत से अधिक सदस्यता के लिए, पीला – 20 प्रतिशत से कम सदस्यता और काला जहां कोई संपर्क नहीं है। सभी राज्यों द्वारा नक्शों में रंग भरने के बाद नक्शों को कार्यशाला हॉल में दीवारों पर लटका दिया गया। सभी राज्यों ने महसूस किया कि ये इस गतिविधि से उन्हें अपनी वास्तविक सांगठनिक स्थिति का असली चेहरा दिखा।

सभी राज्यों ने अपनी कमजोरियों को पहचाना और कमजोरियों से उबरने के लिए ठोस कदम सुझाए और जिलों व परियोजनाओं में प्राथमिकताएं तय कीं। कार्यशाला के अंतिम संत्र में फौरी कार्य लेकर कार्यशाला को 31 अगस्त 2010 को समाप्त किया गया। वे फौरी कार्य हैं –

1. सभी राज्यों में संगठन पर राज्य स्तरीय कार्यशालाएं। राज्यों के इन्चार्ज आइफा पदाधिकारियों की राज्य कार्यशालाओं में उपस्थिति

2. राज्य पदाधिकारियों की टीम का गठन करें जिसमें उपयुक्त पदाधिकारी को कार्यवितरण करना; निर्णयों के क्रियान्वन की देखरेख सुनिश्चित किया जाए

3. प्रभावी तैयारी के साथ राज्य कमेटियों की नियमित बैठकें की जाएं जिनमें मुद्दों पर गहनता से विचार करने के लिए पर्याप्त समय भी हो; राज्य स्तरीय टीम राज्य कमेटी की बैठकों के लिए प्रभावशाली तैयारी करे जिसमें लिखित रिपोर्ट की तैयारी भी शामिल है।

4. राज्य कमेटियां कुछ जिलों को प्राथमिकता दी जाए; जिलों में परियोजनाओं को प्राथमिकता दी जाए और विस्तार और सुदृढ़ता के लिए योजना तैयार किया जाए

5. वर्ष में कम से कम दो बार राज्य कमेटी में जिला व परियोजना कमेटी की कार्यप्रणाली पर प्रमुखता से विचार किया जाए

6. प्रत्येक राज्य में छः माह में जिला व परियोजना कमेटियों की संख्या बढ़ाई जाए; पहचाने गए जिलों व परियोजनाओं पर केंद्रित हों

7. कार्यशाला में पहचानी गई परियोजनाओं में सभी आंगनवाड़ी कर्मचारियों को वर्ष 2011 तक अपना सदस्य बनाएं

8. वर्ष 2010 के अंत से पूर्व सभी राज्यों में पहचाने गए कार्यकर्ताओं के लिए राज्य स्तरीय ट्रेड यूनियन कक्षाएं आयोजित की जाएं

9. पहचानी गई स्थानीय समस्याओं पर राज्य स्तरीय अभियान चलाकर, 2011 के बजट सत्र के दौरान राज्य विधान सभा के समक्ष विशाल प्रदर्शन के रूप में समापन किया जाए

10. 2010 के अंत तक सभी जिला एवं परियोजना कमेटियों द्वारा बैंक एकाउंट खोले जाएं

11. आइफा अखिल भारतीय केंद्र द्वारा उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान में संगठन के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाए

31 अगस्त 2010 कार्यशाला के बाद दोपहर में कार्यसमिति की बैठक आयोजित की गई। कार्यसमिति आंध्र प्रदेश आंगनवाड़ी वर्कर्स एंड हैल्पर्स यूनियन का, कार्यशाला और कार्यसमिति बैठक आयोजित करने के लिए धन्यवाद अदा किया। पश्चिम बंगाल में आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं पर माओवादी तृणमूल गुंडों द्वारा किए जा रहे हमलों, जिनमें अपहरण, जबरन वसूली, आदि और उनके परिवार के सदस्यों को जान से मारना शामिल है, को कार्यसमिति द्वारा गम्भीरता से नोट किया गया और देशभर में आंगनवाड़ी कर्मचारियों के बीच प० बंगाल में वामपंथ पर हो रहे हमलों पर एक अभियान चलाने का निर्णय लिया। ■

आंगनवाड़ी

उत्तराखण्ड:

आंगनवाड़ी कार्यकत्री/सेविका यूनियन उत्तराखण्ड का दो दिवसीय राज्य सम्मेलन 4–5 जुलाई, 2010 को देहरादून में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन स्थल का नामकरण प्रख्यात आंगनवाड़ी नेत्री दिवंगत मीना गुलेरिया के नाम पर किया गया था। पौड़ी की जिला अध्यक्ष अंशी बहुगुणा ने झण्डा रोहण किया जबकि सर्वसाथी सर्वेश्वरी खण्डूरी, अंशी बहुगुणा, कमला सती, हरभजन कौर, मीनू डोगरा, भारती राणा, रेखा नेगी, मुन्नी पंवार पर आधारित अध्यक्ष मण्डल ने सम्मेलन की कार्रवाई का संचालन किया। सम्मेलन में राज्य के 13 जिलों से आए 140 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सीआइटीयू की उत्तराखण्ड राज्य समिति के महासचिव कामरेड वीरेन्द्र भण्डारी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। यूनियन की महासचिव सर्वेष्वरी खण्डूरी ने पिछली गतिविधियों तथा कार्यो की रिपोर्ट पेश की जिस पर बहस में 11 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कोषाध्यक्ष जानकी चौहान ने आय–व्यय का ब्यौरा पेश किया। बहस के बाद इन्हें सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। समापन सत्र में 19 सदस्यीय कार्यकारिणी व नए पदाधिकारियों का चुनाव किया गया जिसमें हरभजन कौर अध्यक्ष, सर्वेश्वरी खण्डूरी कार्यकारी अध्यक्ष, जानकी चौहान महासचिव और लक्ष्मी पंत कोषाध्यक्ष चुनी गईं।

गुजरात:

गुजरात आंगनवाड़ी कर्मचारी संगठन के बैनर तले 25 जुलाई 2010 को बड़ौदा, गुजरात में आंगनवाड़ी कर्मचारियों की राज्य स्तरीय कन्वेंशन आयोजित की गई। यह कन्वेंशन गुरू पूर्णिमा के दिन, जोकि राज्य का एक बहुत महत्वपूर्ण त्यौहार माना जाता है, बहुत ही बारीश और बहुत कम समय के अंतराल के नोटिस पर आयोजित की गई थी, फिर भी इन सभी बाधाओं झेलते हुए कन्वेंशन में 16 जिलों से 150 आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया और संगठन को मजबूत करने और आइफा के दिशा निर्देशों के अनुसार अपनी मांगों को प्राप्त करने के संघर्ष को तेज करने की घोषणा की। इस कन्वेंशन का मुख्य आधार 4–5 मई 2010 को दिल्ली में आयोजित महापड़ाव था जिसमें गुजरात के आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने भाग लिया और उत्साहित होकर संगठन के इंतिहास में पहली बार 9 जुलाई 2010 को अखिल भारतीय हड़ताल में भागीदारी की। आइफा महासचिव हेमलता ने कन्वेंशन का उद्घाटन किया और आंगनवाड़ी कर्मचारियों को राज्य में हड़ताल सफल बनाने पर बधाई दी। उन्होंने केंद्र सरकार द्वारा आंगनवाड़ी कर्मचारियों की अनदेखी करने और आईसीडीएस का निजिकरण कर इस सेवा को समाप्त करने की साजिशों की कड़ी आलोचना की। फैडरेशन के संघर्षों स्वरूप कर्मचारियों को मिले लाभों और लम्बित मांगों का भी जिक्र किया। उन्होंने गुजरात आंगनवाड़ी कर्मचारियों से फैडरेशन के संघर्षों में भाग लेने और संगठन को मजबूत बनाने की अपील की। उन्होंने संगठन में जनवादी कार्यप्रणाली, विभिन्न स्तरीय कमेटियों का प्रभावी रूप से कार्य करने और आम वर्कर्स, हैल्पर्स को भी निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करने पर ज़ोर दिया। गुजरात के मुख्यमंत्री द्वारा बहुत ही जोर शोर से आंगनवाड़ी कर्मचारियों के लिए रिटायरमेंट योजना लागू करने की घोषणा की गई परन्तु इसे लागू करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। राज्य में आंगनवाड़ी कर्मचारियों को अफसरों का उत्पीड़न झेलना पड़ता है; राज्य सरकार द्वारा उनके काम का बोझ बढ़ाया जा रहा है और यहां तक कि कर्मचारियों के आधिकारिक लाभों को भी प्रभावी रूप से लागू नहीं किया जा रहा है। गुजरात सीआइटीयू राज्य कमेटी के महासचिव नागेन भाई पटेल व सचिव अरूण मेहता ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों के प्रति समर्थन व सौहार्दता जताई। कन्वेंशन में एकमत होकर संगठन को मजबूत बनाने और आइफा का एक हिस्सा बनने की घोषणा की गई और सभी जिलों में इसी प्रकार की कन्वेंशने आयोजित करने का निर्णय लिया।

केरल

❖"स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर" द्वारा ई बैंकिंग के माध्यम से आंगनवाड़ी सेविकाओं को 500 रू और सहायिकाओं को 300रू प्रतिमाह पेंशन मिलेगी ❖ कल्याण बोर्ड के वे सभी सदस्य जिनकी आयु 30 अप्रैल 2010 से 60 वर्ष पार कर जाएगी, वे पेंशन के हक़दार होंगे ❖ वर्तमान समय में पेंशन योग्य सेविकाओं की संख्या 2070 और सहायिकाओं की संख्या 2715 है। ❖ वर्तमान समय में आंगनवाड़ी सेविकाओं का मानदेय 2150रू तथा सहायिकाओं का मानदेय 1300 रू है। ❖ 26,769 सेविकाएं व 25,597 सहायिकाएं कल्याण बोर्ड के सदस्य हैं। सदस्यों को गम्भीर बीमारियों जैसे कैंसर, टयूबरकुलोसिस, लिप्रसी, किडनी ट्रांसप्लांट, हृदय रोग आदि हेतु 10,000रू भुगतान किए जाते हैं; विवाह संबंधी व्यय के लिए 2000रू तथा उनके मानदेय के 30 गुणा तक की राशि उन्हें मकान बनाने के लिए ऋण के रूप में दी जाती है; आंगनवाड़ी सेविकाओं और सहायिकाओं के आश्रितों को 10,000रू का भुगतान भी किया जाता है।

रिपोर्ट: देशाभिमानी, दिनांक 16 अगस्त 2010

ऑल इंडिया मिड-डे मील वर्कर्स का "संसद चलो"

25 नवम्बर 2010, नई दिल्ली

मुख्य मांगें: न्यूनतम वेतन, रोजगार सुरक्षा, निजिकरण पर रोक

महिला कर्मियों का कलेक्ट्रेट में जोरदार प्रदर्शन

रूद्रपुर। आंगनवाड़ी, आशा व भोजन माता से जुड़ी अनेक समस्याओं को लेकर 27 जुलाई, 2010 को महिलाओं ने सीआइटीयू के बैनर तले कलेक्ट्रेट में जोरदार प्रदर्शन किया और धरना दिया। इससे पूर्व आक्रोशित महिलाओं ने कलेक्ट्रेट परिसर में जुलूस भी निकाला। इस दौरान गुस्साई महिलाओं ने मुख्य मंत्री के खिलाफ जोरदार नारेबाजी करते हुए आरोप लगाया कि आंगनवाड़ी कार्यकत्रियां अपनी मांगों के लिए संघर्ष कर रही हैं और तो और भोजन माताओं व आशा कार्यकत्रियों का भी बुरा हाल है किन्तु इस पर भी सरकार उनकी समस्याओं को सुलझाने के प्रति गम्भीर नहीं है। मुख्य मंत्री को भेजे गए ज्ञापन में मांग की गई कि भोजन माताओं को न्यूनतम वेतनमान देने के साथ-साथ कार्यकत्रियों के हितों को ध्यान में रखते हुए श्रम कानून भी लागू किया जाए। प्रदर्शनकारियों ने पिछली 9 जुलाई को एक वीआइपी लाल बत्ती गाड़ी में बैठे लोगों द्वारा आंगनवाड़ी महिलाओं पर अभद्र टिप्पणियां करने और उन पर एसएलआर तान कर उन्हें जान से मार देने की धमकी दिए जाने की घटना के खिलाफ अपना तीव्र रोष व्यक्त किया और इसके लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। प्रदर्शनकरियों को हरभजन कौर, कलावती, सुधा पाठक, सुमन व राधा ढौंढियाल इत्यादि नेताओं ने सम्बोधित किया।

राजस्थान:

मिड-डे मील वर्कर्स यूनियन, डूंगरपुर की पहली कन्वेंशन का आयोजन 28 जून, 2010 को किया गया। कन्वेंशन में 600 से अधिक श्रमिकों जिनमें कामकाजी महिलाओं की भारी संख्या भी शामिल थी, ने भाग लिया। सीआइटीयू की राजस्थान राज्य समिति के सचिव कामरेड हजारीलाल शर्मा कन्वेंशन के मुख्य अतिथि थे। रिपोर्ट में बताया गया था कि पिछले 15 वर्षों से बिना न्यूनतम मजदूरी के भुगतान के दोपहर का खाना बनाने वाली महिलाएं तथा पुरुष भारी शोषण का शिकार हो रहे हैं। रसोईयों की सेवाएं किसी नियमों के तहत नहीं हैं। केन्द्र और राज्य सरकारों की ओर से हजारों रसोईयों को कोई सामाजिक सुरक्षा प्रदान नहीं की गई है। रिर्पोट में योजना का निजीकरण नहीं करने, रसोईयों को स्थायी स्कूल का कर्मचारी बनाने, नियुक्ति पत्र देने, रोजगार सुरक्षा व न्यूनतम मजदूरी सुनिश्चित करने, नियमित भुगतान करने, सामाजिक सुरक्षा लाभ जैसे बीमा, पेन्शन, धुलाई भत्ता इत्यादि देने की मांग भी की गई। समापन सत्र में जिला समिति का चुनाव किया गया। नारायण लाल अध्यक्ष, भीमचन्द कोटेज सचिव तथा हेमन्त कुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

जम्मू कश्मीर :

जम्मू एवं कश्मीर में सरकार ने सरकारी स्कूलों में पानी लाने का काम मजदूरों को दिया है। ये मजदूर पिछले 10 से 42 सालों से काम कर रहे हैं। इन्हें बहुत ही मामूली राशि केवल 10रू से 50रू दिए जाते हैं। सीटू इस कानून के खुले उल्लंघन को प्रशासन की नज़रों में लाया और इन मजदूरों के लिए न्यूनतम वेतन, पेंशन बीपीएल कैटेगरी सहित की मांग की। राज्य सरकार द्वारा इन कर्मचारियों को ग्रेड 4 कर्मचारी के रूप में नियुक्त करने का वादा किया गया था। न्यूनतम वेतन और मिड डे मील योजना के लिए उचित व्यवस्था की मांग करते हुए जिला शिक्षा ऑफिस के सामने 27 अगस्त 2010 को प्रदर्शन किया गया। जिला शिक्षा अफसर को मुख्य मंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा गया। अन्य नेताओं के साथ ओ पी खजूरिया ने प्रदर्शन का नेतृत्व किया।

आशा

जम्मू एवं कश्मीर

जम्मू आशा वर्कर्स यूनियन द्वारा 27 अगस्त 2010 को अपनी लम्बित मांगों के समर्थन में एक विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए ओम प्रकाश खजूरिया ने कहा कि आशाएं अपनी कर्तव्य पूरी निष्ठा के साथ निभा रही हैं परन्तु स्वास्थ्य विभाग इनकी समस्याओं और मांगों को सुनने के लिए तैयार ही नहीं हैं। प्रदर्शनकारियों ने जम्मू डिविज़नल कमिश्नर को अपनी मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपा।

आशाओं की मांगें: आशाओं को न्यूनतम वेतन प्रतिमाह दिया जाए; और समय पर दिया जाए; एनआरएचएम को स्थायी कार्यक्रम बनाया जाए; पीएचसी और सीएचसी में आशाओं के लिए रैस्ट रूम उपलब्ध कराए जाएं। सामाजिक सुरक्षा व स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया जाए; प्रशिक्षण दिया जाए व पदोन्नति की जाए; हस्पताल प्रबंधन और स्टाफ द्वारा इनके उत्पीड़न पर रोक लगाई जाए।

केरल

एर्णकुलम जिला आशा वर्कर्स यूनियन ने 21 जुलाई 2010 को प्रतिमाह वेतन और राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन को एक स्थाई कार्यक्रम बनाने की मांग करते हुए एर्णकुलम में बीएसएनएल ऑफिस के सामने से मार्च निकाला। हाईकोर्ट जंक्शन से आरम्भ हुए इस मार्च में 500 से भी अधिक आशा कर्मचारियों ने भाग लिया। बीएसएनएल ऑफिस के सामने आधे दिन का धरना संचालित किया गया। धरने का उदघाटन सीटू जिला सचिव पी एस मोहनन ने किया और आशा वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष ए पी लवली व आंगनवाड़ी यूनियन की अध्यक्ष के गोमती ने धरने में भाग लेने वाले साथियों को बधाई दी।

आशा कार्यकर्ताओं को त्यौहार भत्ता

केरल में वामपंथ सरकार द्वारा 12 अगस्त 2010 को निकाले गए सरकारी आदेश का अखिल भारतीय समन्वय समिति स्वागत करती है। इस आदेश के अनुसार "मान्यताप्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं (आशा कार्यकर्ताओं) को रू 500/– विशेष त्यौहार भत्ता भुगतान किया जाएगा।" देश के किसी भी राज्य पहली बार इस प्रकार की घोषणा की गई है। हम मांग करते हैं कि सभी राज्य इस प्रक्रिया को दोहराएं। हम यह भी मांग करते हैं कि सभी राज्य, उनके राज्य में तय न्यूनतम वेतन की दरों के आधार पर आशा कार्यकर्ताओं को प्रतिमाह वेतन भुगतान करना सुनिश्चित करें।

छबि महतो की बर्बर हत्या

पश्चिम बंगाल में पश्चिम मिदनापुर के पूरे इलाके में आंगनवाड़ी कर्मचारियों की बहादुर नेत्री के रूप में विख्यात छबि महतो के माओवादी – तृणमूल कांग्रेस के गुंडों ने बर्बर हत्या कर दी। उनकी आयु 41 वर्ष की थी। और अपने परिवार की वह एकमात्र कमाऊ सदस्य थी। वह अपने बेटे और दो बेटियों का पालन पोषण कर रही थी। इस समय वह सालबोनी क्षेत्र के बंगबुध गांव में आइसीडीएस परियोजना के तहत आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही थी। गांव के लोगों के अनुसार 2 अगस्त को तथाकथित माओवादियों द्वारा छबि महतो का अपहरण कर लिया गया था। उन्हें छबि महतो से शिकायत यह थी कि छबि महतो उनके आदेशों पर कान नहीं देती थी। गांव वालों के अनुसार कम से कम 21 गुंडों ने छबि के साथ कई दिन तक सामूहिक बलात्कार किया था। गांव वालों ने इन जानवरों के घृणित कृत्यों को देखा था जो छबि को घसीटते हुए जंगल में ले गए थे। अभी तक ये लोग डर के मारे चुप्पी साधे हुए थे। उन्होंने बताया कि छबि को जिंदा ही दफ्न किया गया था, हालांकि वे उत्पीड़न के चलते बेहोश थीं।

गांव वालों के अनुसार, गत 31 अगस्त को उन्होंने गांव के पास जंगल से लगता हुआ एक बड़ा सा गड्ढा देखा, जिसे खोदकर भर दिया गया था। गांववालों को आशंका हुई। उन्होंने फौरन सालबोनी पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने आकर कार्यकारी मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में वह गड्ढा खोदा। उस गड्ढे से छबि महतो का सड़ा गला शव मिला।

याद रहे, सालबोनी क्षेत्र के कई हिस्से तथाकथित माओवादियों तथा तृणमूल कांग्रेस गठबंधन के नियंत्रण में है। आतंक की कार्यवाहियों के सिलसिले में वे अनगिनत कार्यकर्ताओं की हत्याएं कर चुके हैं। इस प्रक्रिया में तथाकथित माओवादियों और उनके मोर्चा संगठन पुलिस उत्पीड़न विरोधी कमेटी (पीसीपीए) के गुंडों ने छबि महतो को तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी द्वारा संबोधित की जाने वाली लालगढ़ रैली के प्रचार के लिए निकाले जाने वाले एक जुलूस में शामिल होने का आदेश दिया। उन्होंने यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि वे दूसरी पार्टी से संबंधित हैं। उन्हें खुलेआम धमकाया गया।

छबि महतो, पश्चिम बंगाल आइसीडीएस कर्मी समिति की सक्रिय नेता थीं। वे सीआइटीयू की गतिविधियों में भी बढ़ चढ़ कर भाग लेती थीं, और सालबोनी में इसकी प्रमुख कार्यकर्ता थीं। हम श्रमिक आंदोलन की इस बहादुर नेत्री को हार्दिक श्रद्धांजली भेंट करते हैं।

आंगनवाड़ी कर्मचारी यूनियन की पश्चिम बंगाल कमेटी, उन आंगनवाड़ी कर्मचारियों और उनके परिवारों को सभी आवश्यक सहायता व समर्थन उपलब्ध कराने के हर संभव प्रयत्न कर रही है, जो आंगनवाड़ी कर्मचारी माओवादियों के निशाने की ताक पर हैं। इन कठिन परिस्थितियों के दौर में, आइफा और देशभर में इसकी सभी संबद्धित यूनियनें प0 बंगाल यूनिट और प0 बंगाल के आंगनवाड़ी कर्मचारियों के समर्थन में साथ खड़ी रहेंगी। आइफा ने अपने सभी यूनिटों से निवेदन किया है कि आंगनवाड़ी कर्मचारियों पर हो रहे माओवादियों के अत्याचार को रोकने और दोषियों को सज़ा दिलाने के लिए तुरंत कदम उठाने की मांग करते हुए प्रधानमंत्री को टेलिग्राम भेजे जाएं। माओवादियों और उनके समर्थकों के असली चेहरों को सामने लाने के लिए, सभी राज्य कमेटियों द्वारा आंगनवाड़ी कर्मचारियों के बीच व्यापक अभियान चलाया जाए।

के हेमलता द्वारा, अखिल भारतीय कामगार महिला समन्वय समिति (सीटू) के लिए, ए–13, राउस ऐवेन्यू, नई दिल्ली से संपादित एवं प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, ए–21, झिलमिल इंडस्टीयल एरिया, जी टी रोड, शाहदरा दिल्ली–95 से मुद्रित